उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू

वार्षिक प्रतिवेदन 2022–23

आईजीपी कार्यक्रम का स्वतंत्र रूप से संचालन– इस वर्ष में जो बिक्री हुई है, वह शत–प्रतिशत बी.टू.सी. की हुई है। गत 6–7 वर्षों में कार्यक्रम प्रबन्धन ने जिस प्रकार कशीदाकारी का काम करने वाली महिलाओं के स्वावलम्बन, आय संवर्द्धन और महिला दस्तकारों की देश विदेश में पहचान बनाने के लिये जो मेहनत की है, उन्हीं कार्यों को इस साल बिना किसी बाहरी वित्तीय सहयोग के कार्यक्रम को स्वयं अपने स्तर पर संचालित किया है।

अभी हमारे उत्पाद निम्नलिखित ओनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से बिक रहे हैंः–

- ओखाई
- जयपौर
- उरमूल डेजर्ट क्राफ्ट

- **आईजीपी उत्पादों की प्रदर्शनी–** इस तिमाही के दौरान आयवर्द्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत निर्मित उत्पादों की विभिन्न शहरों में प्रदर्शनियां आयोजित की गई, जिसमें से बैंग्लोर प्रदर्शनी में अच्छी बिक्री हुई।
- **वित्तीय वर्ष 2022–23 का लक्ष्य व उपलब्धि–**

लक्ष्य	पहली तिमाही	दूसरी तिमाही	तीसरी तिमाही	चौथी तिमाही	योग
कुल	20,00,000	50,00,000	50,00,000	30,00,000	1,50,00,000
उपलब्धि	16,12,197	16,00,636	21,11,343	15,59,786	68,83,962

स्फूर्ति कार्यक्रम

भारत सरकार के स्फूर्ति कार्यक्रम में उरमूल सीमान्त समिति, विशेष प्रयोजन माध्यम संस्था (SPV) के रूप में चयनित है। इस कार्यक्रम के तहत् उरमूल ट्रस्ट (संचालन संस्था) और डेजर्ट रिसोर्स सेन्टर (तकनीकी एजेन्सी) के नेतृत्व में बज्जू केम्पस में नेचुरल डाइंग यूनिट स्थापित की जा रही है। यह भवन डेजर्ट रिसोर्स सेन्टर द्वारा तैयार किये गये डिजायन के अनुरूप सस्टेनेबल आर्किटेक्चर तकनीक व सामग्री का इस्तेमाल करके बनाया जा रहा है। इस कार्यक्रम में अभी तक सभी संस्थाओं का योगदान इस प्रकार रहा हैः–

भारत सरकार के लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME)	2,13,36,500
उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर (IA)	9,85,000
उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू (SPV)	49,69,583
डेजर्ट रिसोर्स सेन्टर (TA)	32,08,383

उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू (SPV) को इस कार्यक्रम के तहत् जो कार्य करने थे, उनका विवरण निम्नानुसार हैः–

- उरमूल सीमान्त समिति ने स्फूर्ति कार्यक्रम का प्रभाव बढाने के लिये एचडीएफसी बैंक के सीएसआर–प्रोजेक्ट के साथ कन्वर्जेंस किया है। इसके तहत् 36,71,202 रूपये का योगदान मिला है।
- संस्था की साधारण सभा की कार्यकारिणी में 33 प्रतिशत प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिये निम्नलिखित दस्तकारों को शामिल किया गया हैः– 1. तारीबाई– डेली तलाई, 2. समदाबाई– कोलासर पश्चिम, 3. घड़साना की चम्पा, 4. गड़ियाला की गुलशन व 5. डण्डकला की चांदनी के नामों का चयन किया गया।

- माह जून 2022 तक कुल 91 दस्तकार महिलाओं का बीमा करवाया गया था। इस तिमाही में 173 दस्तकार महिलाओं का दुर्घटना बीमा करवाया गया। 264 महिला दस्तकारों का दुर्घटना बीमा करवाया गया।

एग्री डेयरी़ एवं जैविक कृषि फार्म

1. **गायपालन**– वर्तमान में डेयरी में 18 गाय दूधारू, 1 सांड, 6 बछड़े, 18 बछड़ियां कुल संख्या–44 है। गायों की देखभाल करने हेतु अचलाराम, मेगाराम, दो सदस्य मिलकर सारा काम करते हैं। आगामी लक्ष्य 100 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन का है। अगस्त माह से सभी गायों को बाहर बांगडसर रोड के पास खुले में चरा रहे हैं जिससे दो माह का सूखे चारे की बचत हुई है जो कि अनुमानित 50000 रू. की बचत हुई है और गायों को भी खुले में हरा चारा मिलने से उनके स्वास्थ्य में अच्छा सुधार हुआ है। डेयरी में दूधारू गायों से मिलने वाले दूध की बिक्री करने से 95,000 रू. आय हुई। साथ में छोटी बछडियों को भी पालकर आगे गाय बनाने की प्रक्रिया चल रही है, जिससे भविष्य में आय होगी जिनकी संख्या 18 है। डेयरी में 4 बछडियों को पालकर दूधारू गाय बना लिया गया है इनकी कीमत 1,20,000 रूपये हैं।
2. **अजोला**– अजोला घास का उपयोग, गायों को खिलाने में किया जा रहा है जिससे इसमें पोषक तत्वों की भरपूर मात्रा होती है और गायों को खिलाने से दूध में बढोतरी तथा अभी वर्तमान में 4 से 5 फेट आ रहा है। वर्तमान में डेयरी में 6 पिटों में यह घास उगाया जा रहा है। रोजाना औसत 5 किलो अजोला निकाला जाता है और गायों को खिलाया जाता है। कभी कभी उत्पादन मात्रा ज्यादा हो जाती है तो इसको सुखाकर उत्पादन की कमी के समय के लिये रख लिया जाता है।
3. **एग्री फार्म–** फलदार पौधे नींबू, आवला, अनार के पौधों पर फल आना शुरू हो गया है। इससे भी आगे आय होगी। बाडी में सब्जी उत्पादन हेतु जमीन तैयार कर ली गई है और अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह में बुवाई की जायेगी। पौधों की संख्या– किनु 31, अनार 31, नीबू 101, आवला 71, बेर पेम 9, शहतूत 11, मोरिंगा 281, गुन्दा 27, खजूर 1, बिलपत्र 2, इस प्रकार कुल पौधों की संख्या 565 है।
4. **वर्मी कम्पोस्ट खाद**– कुल 4 पिटों में खाद तैयार की गई है। यह 50 से 60 किवंटल उत्पादन होगा जिसको आगामी फसल गेहूं हेतु काम में लिया जायेगा। इसकी कीमत 30000 रू. के लगभग होगी जोकि फार्म में जरूरत अनुसार काम लेने के बाद शेष बची खाद को बेचा जायेगा।
5. **देशी बाजरी का उत्पादन–** नवाचार के रूप में गायों हेतु देशी बाजरी का उत्पादन किया गया। इससे चारा अधिक मिलता है। इसकी लम्बाई 15 फुट के लगभग तक हो जाती है। यह सीकर से बीज लाकर उत्पादन किया गया जो कि बेहतर उत्पादन इस क्षेत्र में हुआ है। साथ में मोठ की फसल भी तैयार की गई है और इससे भी चारा व मोठ मिलेगा।

मानवीय सहायता हेतु शिक्षण और अनुसंधान को बढ़ावा (ELRHA)

भेड़पालकों द्वारा अपनी भेड़ों को चराने व पानी आदि की व्यवस्था के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है। जिस रास्ते से भेड़ों के रेवड़ जाते हैं, उस रास्ते पर भेड़ों व भेड़पालकों के लिये कहीं विश्राम करने आदि का स्थान नहीं है। संस्था द्वारा जोधपुर जिले के उन गांवों से जानकारी इकट्ठी की गई, जहां भेड़ें ज्यादा है और इस प्रकार की समस्या है। क्षेत्र के नारायणपूरा व लूणा के लोगों के साथ इस विषय पर चर्चा की गई तो वहां से इस प्रकार की आवश्यकता निकलकर आई।

संस्था द्वारा एलरा कार्यक्रम के अन्तर्गत इस समस्या का हल करने का विचार किया गया। भेड़पालकों के लिये नारायणपूरा व लूणा में एक एक कॉमन फेसिलिटी सेंटर (CFC) निर्माण कार्य किया गया, जिनमें भेड़ के चारा

व पानी की व्यवस्था, भेड़ों की स्वास्थ्य जांच व उचित उपचार, और इसके साथ–साथ भेड़ की ऊन कटाई आदि की व्यवस्था भी इन केन्द्रों पर की गई है।

- भेड़ों के चारा के लिए हाइड्रोपोनिक की व्यवस्था, गोचर जमीन मे सेवन घास, खेजड़ी, बेरी, सूखी पत्तियां, खेत में ग्वार का सूखा चारा इस प्रकार की जो प्राकृतिक घास उगती है उसको भेड़ें बड़े चाव से खाती हैं। जहाँ पर CFC सेन्टर बने हैं, उसके आसपास की खाली जमीन (चाहे गोचर हो या ओरण) पर सब भेड़पालक संस्था के साथ मिलकर प्राकृतिक घास लगायेंगे और जो सेन्टर पर हाइड्रोपोनिक मशीन लगाई गई है उसमें गेहूं, बाजरा व मक्का आदि का चारा उगा पायेंगे। इसमें कोई भी यूरिया आदि काम में नहीं लिया जायेगा। हाइड्रोपोनिक में जो चारा उगाया जाता है वो पशुओं के लिए बहुत लाभदायक होगा।
- भेड़ों के पीने के पानी की व्यवस्था के लिये cfc सेन्टरों पर 70 हजार लीटर के 2 कुण्डों का निर्माण हुआ है, जिसका उपयोग भेड़पालक अपनी भेड़ों को पानी पिलाने में कर रहे हैं। इसके साथ साथ जो ओरण गोचर में पानी के लिए खेलियां बनाई गई हैं उन खेलियों में सब लोग मिलकर पानी डलवायेंगे ताकि भेडें और अन्य पशु भी पानी पी सकें। सामुदायिक व सार्वजनिक पानी के स्टोरेज के लिए तालाब हैं उनका समय समय पर निरीक्षण किया जाएगा ताकि बरसात के पानी को ज्यादा समय तक स्टोरेज किया जाए।
- भेड़ों के स्वास्थ्य व ऊन के बारे मे चर्चा की गई। भेड़ की ऊन की कटाई, साल भर में 3 सीजन में की जाती है। जो भी ऊन कटाई करते हैं तो ठेकेदार, भेड़ों की ऊन कम दरों पर खरीद कर ले जाते हैं जिससे भेड़पालकों को काफी नुकसान होता है।
- अगर भेड़पालक, अपनी भेड़ों की ऊन की कटाई करने से पहले उनको नहला लें तो उसमें से जो रेत होती है वो निकल जाएगी। दोनों cfc सेन्टर पर जाकर अपनी अपनी भेड़ों को नहला सकते हैं और उसी सेन्टर में भेड़ की ऊन की कटाई भी कर सकते हैं। भेड़ की ऊन की कटाई समय पर करके उसी सेन्टर में बेच भी सकते हैं।
- भेड़ की मींगणी की खाद को लोग ज्यादा महत्व नहीं देते, क्योंकि भेड़ कहीं भी मल–मूत्र कर देती हैं जो कोई काम में नहीं ले सकते। लेकिन अगर भेड़पालक अपनी भेड़ों को बैठने के लिये एक जगह दे देते हैं तो उसका मलमूत्र एक जगह ही रहेगा। जिस खेत मे कुछ बोना या उगाना हैं, उसके लिए ये खाद बहुत ही उपयोगी है और इसके साथ साथ जो दोनों सेंटरों मे कॉकोपिट खाद वितरण किया गया है उस खाद में मिलाकर उसको जमीन में छिड़काव करना होता है। कॉकोपिट, खाद के साथ मिलाकर जमीन में डालने से जमीन में नमी बनी रहती है जिसकी वजह से प्राकृतिक घास सही से बढना शुरू करती है।
- भेड़ के मांस के बारे में जो बाहर के व्यापारी हैं वे भेड़ों का वजन जब तय करते हैं तो उसको थोड़ा ऊपर उठा कर देखकर ही कीमत तय कर देते हैं जिससे भेड़पालकों को काफी नुकसान होता हैं। क्योंकि सही वजन के लिए भेड़पालकों के पास कोई साधन नहीं है तो कम कीमत में इनकी भेड़ व बच्चे दोनों को नुकसान की स्थिति में ही व्यापारी को बेचना पड़ता है।
- भेड़ की ऊन को बाजार में बेचने के अलावा घरों मे रहने वाली महिलायें ऊन कताई करके गृह साजसज्जा के उत्पाद बना सकती हैं। इसके अलावा हमारे देश में और दूसरे देशों में भी ऊन की उपलब्धता है।
  भेड़ की ऊन हमारे देश में भी और बाहर के देश में जो बिल्डिंग बनाते हैं जैसे कि मीटिंग हॉल के अंदर जो दीवार होती है उसमें ऊन का एक फेल्ट बनाकर लगाया जाता है ताकि जब कोई 2 लोग आपस में बात करें तो उनकी आवाज ना टकराए और जिसमें सभी लोग आपस में आसानी से बात कर सकते हैं।
- माह मार्च में दिनांक 28.03.2023 को एलरा की जर्मन अधिकारी ईशाबेल द्वारा परियोजना का अवलोकन किया गया। उन्होंने नारायणपुरा के कॉमन फेसिलिटी सेन्टर का अवलोकन किया और वहां के भेड़पालकों से बातचीत

की। भेड़पालकों की समस्याओं को जाना और पहले के समय में किस प्रकार की व्यवस्थायें होती थी। अब किस तरह का बदलाव आया है।

चाइल्ड हेल्पलाइन 1098

1. चाइल्डलाइन टीम तथा संस्था के कार्यकर्ता, फील्ड में जाकर महिलाओं बच्चों व युवाओं को 1098 पर कॉल करवाई जाती है। कॉलर को 1098 के द्वारा किस तरह से सहायता प्रदान की जा सकती है, उसके बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की जाती है।
2. चाइल्डलाइन के माध्यम से जितने भी प्रकरण आते हैं उनको रजिस्टर में दर्ज किया जाता है। मार्च 2022 से जून 2022 तक की अवधि के दौरान चाइल्डलाइन के माध्यम से 12 प्रकरण प्राप्त हुए। इन सभी प्रकरणों के बारे में मोबाईल एवं व्यक्तिगत मिलकर जानकारी प्राप्त की गई। इसके बाद संबंधित विभागों से 10 प्रकरणों का निस्तारण करवाया गया। वर्तमान मे 2 प्रकरण चालू हैं।
3. शक्ति अभियान के तहत **माहवारी स्वच्छता प्रबन्धन और गुड टच, बैड टच** विषय पर कोलायत पंचायत समिति तथा बज्जू पंचायत समिति में ब्लॉक स्तरीय कार्यशाला आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार, विकास अधिकारी, खण्ड मुख्य चिकित्सा अधिकारी, बाल विकास परियोजना अधिकारी, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, अध्यापक, महिला पर्यवेक्षक, प्रचेता, अध्यापक, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता तथा निजी विद्यालय के अध्यापक सहित 275 संभागियों ने भाग लिया।

   कोलायत कार्यशाला में चाइल्डलाइन समन्वयक रामप्रसाद हर्ष और बज्जू में कंवरसिंह ने दक्ष प्रशिक्षक रूप में भाग लिया। सभी संभागियों को माहवारी के संबंध में घर–परिवार तथा समाज में इस विषय पर चुप्पी तोड़ने के लिये प्रेरित किया गया। प्रत्येक स्तर पर इस विषय पर खुलकर चर्चा करनी चाहिये ताकि किशोरी बालिकाओं को प्रथम बार माहवारी आने पर स्वच्छता प्रबंधन करने में किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़े।

   कार्यशाला के दूसरे सत्र में गुड टच, बैड टच के बारे में जानकारी दी गई। किशोर व किशोरियों को बैड टच का अनुभव होने पर तुरन्त उसी समय क्या करना चाहिये, उसके बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। सुरक्षित स्थान पर पहुंचने के बाद चाइल्डलाइन 1098 पर कॉल करने के बारे में बताया गया। 1098 पर कॉल आने के बाद कॉलर का नाम गुप्त रखा जाता है। संबंधित थाने को सूचित कर कानूनी प्रक्रिया की जाती है। कार्यशाला के सभी संभागियों को अपने कार्यक्षेत्र में अधिक से अधिक किशोर–किशोरियों को 1098 की जानकारी देने के लिये प्रेरित किया गया जिससे 1098 हेल्पलाइन का लाभ अधिक से अधिक मिल पाये।

समशिक्षा

COVID–19 ने सबसे कमजोर बालिकाओं और महिलाओं के अवसरों और अधिकारों के लिए अनूठी समस्याएं पेश कीं। पश्चिमी राजस्थान में, बच्चों और महिलाओं के अधिकारों को सुरक्षित करने और उनकी रक्षा करने का संघर्ष, एक लंबी लड़ाई रही है।

परियोजना समशिक्षा के तहत जिसका अर्थ है– शिक्षा में समानता। हमने लिंग, बाल अधिकार और डिजिटल शिक्षा पर अपने अभिसरण हस्तक्षेप प्रयासों का आयोजन किया है। किशोर लड़कियों को संसाधन और ज्ञान प्रदान करने पर ध्यान देते हैं जो उनके शिक्षा स्तर और जागरूकता के स्तर को बढ़ाते हैं। हमने पाठ्यक्रम (8वीं से 10वीं कक्षा), सह–पाठ्यक्रम और करियर परामर्श के 700 वीडियो बनाए।

मुख्य उद्देश्य छात्र छात्राओं तक पहुंचना और यथासंभव डिजिटल सामग्री का प्रसार करना है। पिछली बार जब हम स्कूल गए थे, तो हमें पता चला कि जैसे–जैसे परीक्षाएं नजदीक आ रही हैं, बच्चे जल्द से जल्द सामग्री और वीडियो देखने के लिए उत्सुक हैं। इसके लिये हमने छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों सहित सभी

हितधारकों तक वीडियो फैलाने के लिए जोधपुर जिले के स्कूलों में यात्रा की योजना बनाई। इन यात्राओं में कार्यक्रम दल व फील्ड टीम में अशोक जी, निशांत जी, शुभ्रा, आकाश, संतोष जी और कल्पना जी शामिल थे।

डिजिटल लर्निंग जागरूकता और करियर– जोधपुर जिले के विभिन्न उपखण्डों के 9 स्कूलों, केजीबीवी और ओसियां, रतकुरिया, बालेसर, भावी, नंदवन, जगरिया और फलोदी के सरकारी स्कूलों का दौरा किया। छात्रों ने सत्रों का भरपूर आनंद लिया और उनके साथ करियर के अवसरों पर चर्चा की और अपनी शंकाओं को दूर किया।

समशिक्षा यूट्यूब चैनल प्रबंधन– प्रोजेक्ट समशिक्षा के यूट्यूब चैनल पर वीडियो को सार्वजनिक किया। सभी वीडियो सामग्री, विवरण, शीर्षक, थंबनेल निर्माण का प्रबंधन, सह–पाठ्यक्रम वीडियो के पोस्ट–प्रोडक्शन में विचार दिया।

शोध पत्र प्रक्रिया हेतु रमेश सारण, निशांत ओझा और स्निग्धा के साथ टीम की बैठक– शोध पत्र की आवश्यकता, प्रभाव, सीमाओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

1. **लूणकरणसर में डिजिटल लर्निंग जागरूकता और करियर परामर्श सत्र–** उरमूल सेतु संस्थान, लूणकरणसर की विजिट करके वहां के सचिव श्री रामेश्वर जी और समन्वयक मुखराम जी के साथ शिक्षा संबंधी विचारों पर चर्चा की, कि वे शिक्षा क्षेत्र में कैसे काम कर रहे हैं। लाभार्थियों तक पहुंचे, प्रभाव का अध्ययन किया और सामग्री का प्रसार किया। बिंझरवाली, मकड़ासर व रामबाग गांवों में फील्ड विजिट कर ओपन स्कूल बोर्ड के परीक्षार्थियों से बातचीत की।

   बज्जू खालसा और बज्जू तेजपुरा गांवों का दौरा किया, बच्चों के साथ बातचीत की और उन्हें कम्प्यूटर सीखने और डिजिटल शिक्षा के बारे में जागरूक किया। उरमूल सीमांत समिति परिसर, बज्जू में आयोजित होने वाले चाइल्डलाइन 1098, आरएस–सीआईटी पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन शिविर के बारे में बातचीत करके प्रेरित किया।
2. **15 दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर–** उरमूल सीमांत समिति परिसर में 15 दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया। इसमें करीब 40 छात्रों ने भाग लिया। हर दिन उन्हें रचनात्मक गतिविधियों में शामिल किया, और बाल अधिकार, शिक्षा का अधिकार, यौन शोषण और मासिक धर्म स्वच्छता पर समशिक्षा वीडियो दिखाए।
3. **महिला अधिकारिता निदेशालय द्वारा आयोजित जिला स्तरीय कार्यशाला–** 15 जून 2022 को राज्य सरकार के महिला अधिकारिता निदेशालय द्वारा उरमूल ट्रस्ट के सहयोग से रवींद्र रंगमंच, बीकानेर में आयोजित कार्यशाला में लगभग एक हजार सरकारी शिक्षकों के साथ मासिक धर्म स्वच्छता और सुरक्षित और असुरक्षित संपर्क पर बच्चों और किशोरों से संबंधित इन मुद्दों के बारे में चर्चा करके उन्हें उन्मुख किया गया। सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के लिए तैयार पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से संभागियों को जानकारी दी गई।

   मासिक धर्म स्वच्छता और सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श पर अभिविन्यास, प्रश्नावली और चर्चाएं आयोजित की गईं। कार्यशाला दो स्लॉट में हुई जिसमें शिक्षक, मासिक धर्म स्वच्छता, सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श और डिजिटल शिक्षा के बारे में उन्मुख थे। परियोजना समशिक्षा के तहत विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर बनाए गए वीडियो की स्क्रीनिंग की गई और उपस्थित सभी हितधारकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली।

   इसके अलावा, बच्चों के यौन शोषण का मुद्दा आजकल प्रमुख चिंता का विषय है और स्कूल स्तर पर जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है।

''सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श'' और कई चीजों के बीच अंतर– यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे सुरक्षित रहें, उरमूल ट्रस्ट ने कठपुतली शो के माध्यम से छोटे बच्चों से बातचीत की और उनकी चिंताओं के बारे में जानने की कोशिश की। बाद में, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 द्वारा ''कोमल'' नामक एक लघु फिल्म दिखाई गई, जिसमें इस मुद्दे को स्पष्ट रूप से समझाया गया और दिखाया गया कि शिक्षक बच्चों के जीवन में भरोसेमंद लोगों की भूमिका निभाते हैं और वे इस तरह की दुर्घटनाओं को रोक सकते हैं।

उरमूल ट्रस्ट द्वारा एक पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया गया और बाल यौन शोषण पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया और बताया गया कि कैसे शिक्षक ऐसी घटनाओं से बच्चों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

आरकेसीएल

- संस्था की महिला कार्यकर्ता लक्ष्मीरानी ने केम्पस में ही रहकर कम्प्यूटर सीखा और धीरे धीरे अपने खुद के पैसे से एक लेपटॉप खरीदा। लक्ष्मीजी ऑफिस के सभी कार्य अब लेपटॉप पर ही करती हैं। उनकी लगन को देखते हुए माह जनवरी 2022 में संस्था के आरकेसीएल प्रोजेक्ट संचालन की जिम्मेदारी लक्ष्मीजी को सौंपी गई। अप्रेल 2022 में कुल 3 ही बच्चे थे, इसके बाद इन्होंने मेहनत और फील्ड में सम्पर्क करके वर्ष में कुल 140 छात्र–छात्राओं को और जोड़ा, जिनके ओनलाइन फार्म भरे गये।
- आरकेसीएल के बज्जू केन्द्र को गति देने में उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर द्वारा सेन्टर पर आरकेसीएल प्रशिक्षणार्थियों को 1500 रूपये प्रत्येक छात्र छात्रा के हिसाब से अनुदान का सहयोग किया, जिसके कारण छात्र छात्राओं ने लगभग आधे शुल्क में ही यह प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके लिये उरमूल सीमान्त समिति द्वारा ट्रस्ट का आभार व्यक्त किया जाता है। माह अप्रेल से सीमांत, अपने संसाधनों से केन्द्र का संचालन कर रहा है।

स्थानीय आजीविका उद्यमों को बनाये रखने हेतु चारे व मशरूम की सौर उर्जा संचालित जलवायु नियन्त्रित उर्ध्वाकार खेती (IWMI)

- गांवों के सामुदायिक केंद्रों के पास एक जलवायु नियंत्रित पॉलीहाउस स्थापित करें जिसमें एकाधिक ऊर्ध्वाकार कृषि प्रणालियां तैनात हैं और सौर ऊर्जा द्वारा संचालित एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित किसान हर दिन 500 से 600 किलोग्राम उच्च प्रोटीन चारा उगा सकता है जो 100 प्रतिशत सेवा कर सकता है। यह डेयरी की आय में 15 से 20 प्रतिशत तक सुधार करने में मदद कर सकता है। ऊर्ध्वाकार खेती के तरीकों में आय के नए स्त्रोत पैदा करने के लिए भी अवसर प्रदान करते हैं, यह राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित है। कुल 523 के आकलन के लिए 13 गांवों में घरेलू सर्वेक्षण किए गए।
- पशुओं की आबादी, उनके लिए चारे और पानी की उपलब्धता और पहुंच। पशुधन और पशुपालकों और किसानों के सामने कई अन्य चुनौतियां। खंदासर, नान्दड़ा, नेणिया, चिमाणा, हनुमाननगर, भेलू, सारणपुरा, संतोकनगर, इमामनगर, खिखनिया पट्टा, खारा लोहान व सियाणा गांवों में सर्वेक्षण किया गया। पश्चिमी राजस्थान में कृषि अर्थव्यवस्था के साथ पशुपालन किया गया है।
- पशुपालन, अनादि काल से आजीविका का पारंपरिक स्रोत है और आज भी बना हुआ है। क्षेत्र में कृषि की निम्न संभावनाओं को जानकर कई परिवार विभिन्न गैर–कृषि गतिविधियों पर निर्भर हैं। जहां मवेशियों का स्वास्थ्य और भलाई हर चीज से पहले आती है।
  मवेशियों के फलने–फूलने के साथ अपनी उच्चतम क्षमता तक और अनावश्यक रूप से किसी भी रोके जाने योग्य या गैर–रोके जाने योग्य रोग। हमारा उद्देश्य भोजन, चारा और जल सुरक्षा प्रदान करना है और एक बड़ी आबादी वाले क्षेत्र के साथ एक ऊर्ध्वाकार कृषि प्रणाली को प्रोत्साहित करना।
  सर्वे के आधार एवं सुव्यवस्थित चिमाना केंद्र के नजदीक गांव घंटियाली की निवासी सुश्री पालुदेवी के आवासीय परिसर में 20*8 मीटर क्षेत्र में चारा स्टेशन का निर्माण कार्य पूर्ण किया गया।
- **गतिविधि**– बहुला फोडर स्टेशन, बज्जू वर्तमान में संचालित है। इस चारा स्टेशन में गेंहू व बाजरा उत्पादन लिया जा रहा है। यह 20 दिसम्बर 2021 को शुरू किया गया। जनवरी–फरवरी माह में 617 किलो गेहूं बीज से 5046 किलो हरे चारे का उत्पादन करके संस्था की डेयरी को सहयोग के रूप में 4946 किलो हरा चारा दिया गया एवं बाजार प्राप्ति हेतु 57 किलो हरा चारा काटकर सोलर ड्रायर में सुखाकर 4.5 किलो व्हीट ग्रास पाउडर बनाया है।

बहुला कार्यक्रम

गाँवों की संख्या– 54 | जिलाः बीकानेर व जोधपुर | क्लस्टरः बज्जू, चिमाणा व गड़ियाला

क्र.सं.	गतिविधियों का नाम	लक्ष्य	प्राप्ति	शेष	विवरण
1	बेसलाइन सर्वे	2500	2604	0	अप्रेल में सर्वे का कार्य पूरा किया गया और सर्वे के आधार पर एक रिपोर्ट भी तैयार की गई।
2	सामुदायिक बैठक एवं प्रशिक्षण	22	22	0	क्राफ्ट फील्ड में कुल 7 सामुदायिक बैठकों और बुनाई एवं धागे की कताई को लेकर 14 प्रशिक्षण आयोजित किये गये। इन प्रशिक्षणों के माध्यम से 402 महिलाओं को बुनाई और धागे की कताई का प्रशिक्षण दिया गया।
3	जैविक कृषि (बायो इनपुट सपोर्ट)	250	218	0	कोको पिट वितरण– 82 बाजरा बीज– 180
4	एंटरप्राइज़ रिसोर्स प्लानिंग (ERP) का विकास	1	1	0	ERP सिस्टम को बहुला कार्यक्रम के अन्तर्गत संस्था से जुड़े हर प्रकार के रिकॉर्ड को संग्रहित कर और सुव्यवस्थित करने के लिए तैयार किया गया है। https://erp.seemant.org/login
5	बायोगैस प्लांट	5	5	0	बज्जू क्लस्टर के गोडू, फूलासर छोटा, भलुरी व बरसलपुर गाँव के 5 किसान परिवारों के घर बायोगैस यूनिट की स्थापना की गई।
6	बाय बैक (कृषि उत्पाद)	12 टन	10 टन	2	किसानों से 10 टन जैविक कृषि उत्पाद खरीदा गया। जिसमें जैविक गेहूं, काला गेहूं, जीरा, सरसों और चना शामिल है। बाइबेक किए गए उत्पाद को बाहर बाजार में बेचा भी जा रहा है। इन जैविक उत्पादों को लेकर बाजार से अच्छी प्रतिक्रिया आ रही है।
7	फाइबर प्रोसेसिंग यूनिट (FPC)	2	1	1	चिमाणा क्लस्टर में कार्य अपने अंतिम चरण में है एवं गड़ियाला क्लस्टर में पंचायत द्वारा जमीन उपलब्ध करवाई जा चुकी है।
8	किसान उत्पादक संगठन का पंजीकरण	1		1	किसानों के लिए किसान उत्पादक संगठन (FPO) पंजीकरण की प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है। इसके लिए समुदाय के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में 15 सदस्यों का चयन, किसान उत्पादक संगठन के सदस्य के रूप में किया गया।
9	देशी ऊन से सम्बन्धित प्रयोग				देशी ऊन को लेकर बड़े स्तर पर काम किया जा रहा है। देशी ऊन को कपड़ा उद्योग के अतिरिक्त बिल्ड इनवारमेंट के क्षेत्र में देशी ऊन की फेल्ट के साथ प्रयोग किया जा रहा है। इस काम को ''स्ट्रोकचर इको'' के साथ पार्टनरशिप में किया जा रहा है।

यूथ कार्डर प्रशिक्षण

बहुला कार्यक्रम के अन्तर्गत कुल 5 प्रशिक्षण आयोजित किए गए जोकि एग्री डेयरी से संबंधित थे जैसे– दूध के प्रसंस्करण से जुड़ी साफ सफाई, मिनरल मिक्स्चर तैयार करने की विधि, दूध की जांच करने की विधि, जैविक खेती कैसे करें आदि।

1	यूथ कार्डर प्रशिक्षण	17 फरवरी 2023	20 प्रतिभागी
2	यूथ कार्डर प्रशिक्षण	22 मार्च 2023	22 प्रतिभागी

3	यूथ कार्डर प्रशिक्षण, कोटा	15 जनवरी 2023	5 प्रतिभागी
4	सहज डेयरी, एक्सपोजर विजिट	2 फरवरी 2023	2 प्रतिभागी

नया उजाला महिला किसान उत्पादक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी FPO को पुनः खडा करना

उरमूल सीमांत समिति ने बहुला कार्यक्रम के माध्यम नया उजाला को फिर से खड़ा करने को लेकर प्रयासरत है। इसीलिए नया उजाला को आर्थिक सहयोग भी किया गया है । इसके साथ ही आने वाले समय में किसानों से की जाने वाली प्रत्येक खरीद को नया उजाला के माध्यम से किए जाने का प्रयास किया जा रहा है।

एमग्रांट फार्मर प्रोफाइलिंग

200 किसान परिवारों की प्रोफाइल एमग्रांट प्लैटफार्म पर तैयार की गई। एमग्रांट HDFC बैंक परिवर्तन के द्वारा पार्टनर संगठनों के लिए अपनाया गया एक मॉनिटरिंग प्लैटफ़ार्म है।

ग्राम स्तरीय समितियों की नियमित बैठक

किसानों को जमीनी स्तर पर संगठित करने के लिए तीनों क्लस्टर में किसानों की 17 ग्राम स्तरीय समितियां बनाई गई है। इन समितियों के माध्यम से किसानों को इनपुट सपोर्ट एवं जैविक दवाइयों को बनाने को लेकर प्रशिक्षण आदि दिया गया है। इस क्वार्टर में कुल 43 ग्राम स्तरीय समितियों की बैठक की गई।

बहुला मार्केटिंग

1	भुज प्रदर्शनी	19 से 28 जनवरी 2023	बिक्री – 59730
2	कोटा प्रदर्शनी	24 से 25 जनवरी 2023	बिक्री – 12070
3	बीकानेर प्रदर्शनी	2 से 10 फरवरी 2023	बिक्री – 3750
4	किशनगढ़ प्रदर्शनी	16 से 17 फरवरी 2023	बिक्री – 7850
5	NRCC प्रदर्शनी	5 मार्च 2023	घुमंतू पशुपालक कार्यक्रम
6	चीज फ़ेस्टा, गोवा	17 से 19 मार्च 2023	कैमल मिल्क चीज लौंचिंग, बहुला नेचुरल्स

उपरोक्त प्रदर्शनियों के माध्यम से जैविक कृषि एवं डेयरी उत्पादों की बाजार में मांग, लक्षित उपभोक्ता वर्ग आदि को समझने का प्रयास किया गया। इसके साथ ही इन उत्पादों की नेटवर्किंग भी की गई।

बायोगैस के लिए 30 प्रतिभागियों का चयन

फार्म इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से उरमूल सीमांत समिति 30 नए किसानों के बायोगैस लगवा रही है जिसके लिए चयन प्रक्रिया पूरी हो गई है। यह बायो गैस 50 किसानों की भागीदारी से लगवाए जा रहे हैं।

राजस्थान जैविक कृषि गठबंधन की आम सभा की बैठक, 25–26 मार्च 2023

25– 26 मार्च 2023 को राजस्थान जैविक कृषि गठबंधन की आम सभी की बैठक की गई । इस बैठक में पूरे राजस्थान से 25 से अधिक संस्थाएं शामिल हुई। यह गठबंधन प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत है। इस बैठक में आगामी वर्ष में की जाने वाली गतिविधियों को लेकर भी चर्चा की गई।

क्राफ्ट –

- **पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन**

जनवरी के महीने में हमने बज्जू क्लस्टर में दिनांक 10 व 11 जनवरी 2023 को 2 टीकाकरण शिविर आयोजित किए– बीठनोक में हमने 776 भेड़ों का जबकि गोविंदसर 634 भेड़ों का टीकाकरण किया।

दिनांक 13 से 27 फरवरी 2023 तक नारायणपुरा 628 भेड़, इमाम नगर 257 भेड़, खजोडा 300 भेड़, खाजुसर गाँव 180 भेड़ों को पशु स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाई गई।

- **क्राफ्ट प्रशिक्षण**

  हमने 4 दिनों, 15 से 18 फरवरी 2023 तक बज्जू कैंपस में हमराज जी द्वारा ऊन की कताई और छँटाई का प्रशिक्षण आयोजित किया। जिसमें 7 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

  इसके बाद 2 दिनों (19 से 20 फरवरी 2023) के लिए चिमाना सीएफसी नारायणपुरा केंद्र में ऊन कताई और छंटाई का प्रशिक्षण आयोजित किया, जिसमें 9 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- **देशी ऊन से बने उत्पादों का विकास**

  - हमने WRA परीक्षण के लिए 2 मिमी, 4 मिमी, 8 मिमी और 12 मिमी फेल्ट के नमूने विकसित किए।
  - बुनाई यूनिट में एक दरी का सेम्पल तैयार किया गया ।
  - हथकरघा और बुनाई इकाई की स्थापना। 1 से 15 जनवरी 2023 के बीच टीम ने सामूहिक रूप से बुनाई इकाई को शुरू करने का काम किया।
  - टॉयलेटरी पाउच, लैपटॉप स्लीव आदि।
  - ब्रांड और मार्केटिंग
  - 3 फरवरी 2023 को किसान हाट, बीकानेर में वूल एक्सपो में 10 दिनों के लिए भाग लिया, हमने ऊन से बने सभी उत्पादों जैसे टॉयलेटरी पाउच, लैपटॉप स्लीव, वायर डिटैंगलर और आदि को प्रदर्शित किया।

ग्रो फंड

आगामी दशक की कार्ययोजनाः दो दिवसीय कार्यशाला– दिनांक 18 से 19 जनवरी 2023 को आगामी दशक की कार्ययोजना के तहत् गठित कोर कमेटी व विभिन्न उपसमितियों द्वारा तैयार की गई कार्यायोजना का प्रस्तुतिकरण हुआ। दो दिन की कार्यशाला के दौरान कुल 15 सत्र आयोजित हुए।

कोर कमेटी के लिये पूर्व में निर्धारित 6 विषयों– (1) प्राकृतिक संसाधन, (2) डिजिटल सेवायें, (3) सरकार की कल्याणकारी योजनायें, (4) सेवा प्रदाताओं व उत्पादकों के संयुक्त उद्यम, (5) आयवद्धद्यन कार्यक्रम व (6) पैरवी विषयों पर विस्तृत प्रस्तुति व उसके बाद चर्चा हुई।

उप समितियों के लिये निर्धारित 6 विषयों– (1) उरमूल सीमान्त की नीतियां, (2) वित्तीय व मानव संसाधन जुटाना व सम्पति मुद्रीकरण, (3) परिसर प्रबन्धन, (4) मानव संसाधन विकास, (5) पहुंच विस्तार व (6) उरमूल सीमान्त का मूलभूत मूल्य (कोर वेल्यू) आदि विषयों पर प्रस्तुतिकरण व चर्चा की गई।

इनके अलावा 3 विशेष सत्र हुए जिनमें (1) आकृति श्रीवास्तव द्वारा सामूहिक उद्यमों का डिजाइन, (2) चित्रिका, हैदराबाद की विजया स्विथा द्वारा उत्पादक संगठनों को प्रेरित करना व प्रेरक संस्था के साथ समन्वयन व रिश्ते और (3) श्री आर.के. अनिल द्वारा संगठनात्मक संस्कृति एवं अगले दशक की प्लानिंग विषयों पर उद्बोधन हुआ।

स्टाफ क्षमतावर्द्धन प्रशिक्षण– व्यक्तित्व निर्माण, कार्य व उत्तरदायित्वों के प्रति स्पष्टता के साथ संगठन संचार व समन्वयन के उद्येश्य से संस्था के समस्त स्टाफ का 3 दिवसीय क्षमतावर्द्धन प्रशिक्षण, दिनांक 21 से 23 जनवरी 2023 तक रखा गया। प्रशिक्षण में पुणे से आये सन्दर्भ व्यक्ति श्री निलेश जी मंत्री द्वारा विभिन्न खेलों व रोचक गतिविधियों के माध्यम से संस्था के आगामी दशक के लिये आवश्यक **''व्यक्तित्व निर्माण''** पर पूरी तरह केन्द्रित विधाओं का प्रशिक्षण दिया।

तीन दिन का यह प्रशिक्षण मुख्य रूप से सूक्ष्म नियोजन, स्पष्टता, नियोजन, स्पष्ट उद्येश्य, कार्य का विभाजन, क्षमता निर्माण, प्रोत्साहन, स्थिति के अनुसार नेतृत्व क्षमता, प्रभावी संचार, नीतिगत नियमों का निर्धारण, संयुक्त जवाबदेही, मूल्यांकन व विश्लेषण बैठकें, मजबूत सम्बन्ध व ऐसे अन्य विषयों पर केन्द्रित रहा।

मिल्क प्रोसेसिंग यूनिट (एमपीयू)

उरमूल सीमांत समिति परिसर में संचालित मिल्क प्रोसेसिंग यूनिट जो कि पशुपालकों की आय में बढोतरी हो व आजीविका में सहयोग मिले, इस उद्देश्य के साथ दुग्ध संकलन केन्द्र का संचालन किया जा रहा है। पशुपालकों के कच्चे माल को इस यूनिट में लाकर उसको प्रोसेस करके मार्केट में बेचने का कार्य किया जा रहा है। पशुपालकों को इनपुट सर्विस के रूप में प्रशिक्षण, कैटल फीड, हाइड्रोपोनिक तकनीक की जानकारी आदि द्वारा

सम्बल प्रदान किया जा रहा है। पशुपालकों के अच्छे गुणवतायुक्त दुग्ध को यूनिट में पनीर, दही, छाछ, मक्खन व घी तैयार करके बेहतर क्वालिटी का माल तैयार किया जा रहा है।
मिल्क प्रोसेसिंग यूनिट द्वारा ऊंटनी के दुग्ध से नमकीन व मीठे बिस्कुट, शुगर फ्री बिस्कुट, आईसक्रीम, घी व केमल मिल्क चीज के हैलूमी, फेटा व शेडर आदि बनाकर बीकानेर जैसलमेर जोधपुर में सेम्पलिंग करके बेचा जा रहा है।

वाटर हार्वेस्ट कार्यक्रम

पश्चिमी राजस्थान का बीकानेर जिला। यहां की भौगोलिक स्थिति की वजह से गर्मियों के मौसम में तापमान, 50 डिग्री से ऊपर और सर्दियों में जीरो डिग्री से नीचे तक चला जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में माह अप्रेल, मई व जून में गर्मी के मौसम में पानी की समस्या अधिक विकट हो जाती है।
पानी की समस्या को हल करने के प्रयास, स्वयंसेवी संस्था उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू द्वारा लगातार किये गये। फील्ड विजिट के दौरान कोलायत ब्लॉक के राणासर ग्राम पंचायत और ग्रामवासियों द्वारा पानी की समस्या के समाधान के लिये किया। संस्था द्वारा अपने कार्यकर्ताओं से राणासर ग्राम पंचायत के राणासर, लाखासर व पाबूसर सिन्दूका गांवों में सर्वे करवाया गया। सर्वे से पता चला कि जलदाय विभाग द्वारा इन गावों में नियमित रूप से पानी की आपूर्ति नहीं की जा रही, इसलिये पंचायत के इन गांवों के लोगों को अपनी आय में से अधिकतम राशि, पानी के लिये खर्च की जाती है। गांव के लोगों ने बताया कि प्रतिमाह 2000 से 3000 हजार रूपये, परिवार के सदस्यों व पशुओं के पानी की आपूर्ति के लिये खर्च किये जाते हैं।
इन गांवों के लोगों की समस्या को देखते हुए उरमूल सीमान्त ने उदयपुर की वाटर हार्वेस्ट संस्था के सहयोग से बरसाती पानी के संरक्षण के लिये जलकुण्डों के निर्माण का निर्णय लिया गया। पंचायत एवं ग्रामीणों के साथ बैठकर 76 जरूरतमंद परिवारों का चयन किया गया और परिवार की एक वर्ष की पानी की व्यवस्था के लिये 11.5 फुट लम्बाई तथा 10.5 फुट चौडाई का 22000 लीटर जल क्षमता के 76 भूमिगत जलकुण्डों का निर्माण करवाया गया।
इन कुण्डों के चारों तरफ 1100 स्क्वायर फुट का छत व आगोर बनाया गया है और घरों की छतों को भी पाईप के माध्यम से कुण्डों से जोड़ा गया है जिससे छत का पानी सीधा कुण्ड में आ जाए।
इसी माह ग्रामीण क्षेत्र में हुई पूर्व मानसून की अच्छी बरसात से सभी 76 जलकुण्ड़ों में औसतन 15000 हजार लीटर पानी आ गया है, जिससे परिवारों में खुशी का माहौल है। उन्होंने उरमूल सीमान्त समिति एवं वाटर हार्वेस्ट का आभार व्यक्त किया और कहा कि इस पानी के आने से हमें 7 माह तक पानी के लिये पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा जोकि कुल 10,500 रूपये होता। इस बचत को हम अपनी खेती व अन्य जरूरतों के लिये काम में ले पायेंगे। अभी तक गांव के लोग टेंकर वालों से जो पानी खरीदते थे, वह पानी शुद्ध भी नहीं होता था और उससे होने वाली जलजनित बीमारियों जैसे दस्त, उल्टी व अन्य बीमारियों पर परिवार का पैसा खर्च होता था, वह अब बच पायेगा।

नेशनल लेवल मॉनिटरिंग

- **विशेष मॉनिटरिंग कार्य–** माह मई 2022, में ग्रामीण विकास मंत्रालय एवं पंचायतीराज मंत्रालय द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) और महात्मागांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी कानून (MGNREGA) की स्पेशल मॉनिटरिंग के कार्य का जिम्मा संस्था को दिया। इसके तहत् मध्यप्रदेश के दो जिलों जालौन व झबुआ की 12–12 ग्राम पंचायतों में विशेष ग्रामसभायें आयोजित करके दोनों योजनाओं की स्पेशल मॉनिटरिंग का कार्य किया गया। माह अगस्त– सितम्बर 2022 में ग्रामीण विकास मंत्रालय एवं पंचायतीराज मंत्रालय द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) और महात्मागांधी राष्ट्रीय

ग्रामीण रोजगार गारण्टी कानून (MGNREGA) की स्पेशल मॉनिटरिंग के कार्य का जिम्मा संस्था को दिया। इसके तहत् दिनांक 31 अगस्त 2022 से 5 सितम्बर 2022 के मध्य, मिजोरम के आईजॉल और मामित जिलों की 12–12 ग्राम पंचायतों में विशेष ग्रामसभायें आयोजित करके दोनों योजनाओं की स्पेशल मॉनिटरिंग का कार्य किया गया।

- **रेगूलर नेशनल लेवल मॉनिटरिंग–** माह जनवरी– फरवरी 2023 के दौरान ग्रामीण विकास मंत्रालय एवं पंचायतीराज मंत्रालय की प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY), महात्मागांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी कानून (MGNREGA), राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM), राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम (NSAP), प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY), डिजिटल इण्डिया लेण्ड रिकॉर्ड मॉडर्नाइजेशन कार्यक्रम (DILRMP), ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम (RSETI), स्वामित्व व पंचायतों का मूलभूत सत्यापन आदि की स्पेशल मॉनिटरिंग की गई। इसके तहत् जम्मू कश्मीर के अनन्तनाग, कुलगाम, पुंछ, राजौरी, कुपवाड़ा व किश्तवार जिलों की 10–10 ग्राम पंचायतों में मॉनिटरिंग का कार्य किया गया।